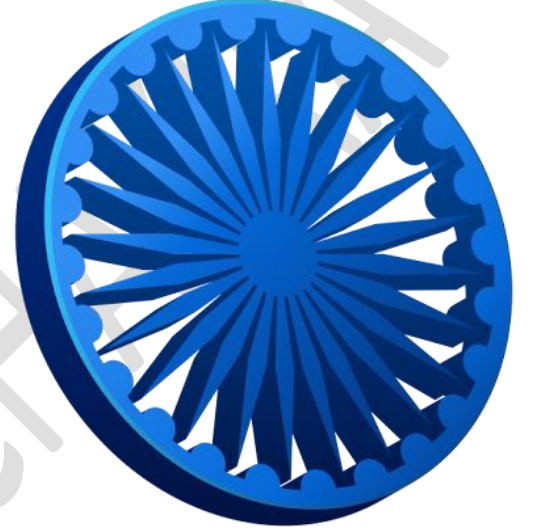


बुद्धिज्म (Buddism)

बौद्ध संस्कृति में शब्द व उनके अर्थ (भाव) –

1. **धम्म** – बुद्ध (बुद्ध) द्वारा बताया गया सुखी "जीवन जीने का मार्ग" ही धम्म कहलाता है। जिसके अन्तर्गत चार आर्य सत्य, पंचशील, अष्टांगिक मार्ग, व दस पारमितायें।
2. **धम्मचक्र** – धम्मचक्र (धम्मचक्क) अर्थात् धम्म का पहिया। धम्म को गतिशील रखना ही धम्मचक्र है पाली में "धम्म चक्क" का शाब्दिक अर्थ है "धम्म का पहिया"। धम्म चक्र का अर्थ तथागत बुद्ध और सम्राट अशोक (Samrat Ashok) से भी है धम्म चक्र (Dhamma Chakra) दो शब्दों से मिलकर बना है धम्म और चक्र, धम्म का अर्थ होता है "बुद्धा द्वारा बताया गया मार्ग व चक्र का अर्थ होता है गतिशील होना", अर्थात् बुद्धा द्वारा बताया गया मार्ग हमेशा गतिशील रहना ही "धम्मचक्र" (dhamachakra) है इसको सम्राट अशोक ने अपने शिलालेखों में 24 तिल्लियों वाला बनाया है। क्योंकि एक दिन में 24 घंटे होते हैं। जिससे की धम्म का कारवा 24 घंटे चलता रहे कभी रुके नहीं। जिसे प्रतिक के रूप में सम्राट असोक ने चक्र अर्थात् पहिये के रूप में अपने राज्य के प्रत्येक दिशा व स्थान में बनवाया था।
3. **धम्म चक्र पवर्तन** – धम्म चक्र पवर्तन (धम्म चक्क पवत्तन) का आशय उस दिन से है जब तथागत गौतम बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद सबसे पहले अपने पाँच परिव्राजको (कोण्डिन्य, अस्सजि, वप्प, महानाम, भदिय) को सारनाथ के **इसोपतनम मृगदावन** में अपना प्रथम धम्म उपदेश दिया था। इस प्रथम धम्म उपदेश दिवस को ही धम्मचक्र परिवर्तन कहते हैं।
4. **भिक्षु** – घर, सम्पत्ति व परिवार आदि छोड़कर, बुद्ध के द्वारा बताये मार्ग पर चलने वाला, धम्म का प्रचार प्रसार करने वाला जो कास्य या केसरिया (भगवा) रंग के वस्त्र धारण करने वाला साधू।
5. **महाभिनिष्क्रमण** – बौद्ध धम्म में गृहत्याग की घटना को **महाभिनिष्क्रमण** कहते हैं।
6. **धम्मचक्रप्रवर्तन** – बौद्ध धम्म में पहले प्रवचन की घटना को **धम्मचक्रप्रवर्तन** कहते हैं।
7. **महापरिनिर्वाण** – बौद्ध धम्म में शरीर त्यागने की घटना को **महापरिनिर्वाण (महापरिनिब्बान)** कहते हैं। यह शब्द केवल बुद्ध के लिये प्रयोग किया जाता है।
8. **परिनिर्वाण** – जब कोई व्यक्ति आम जनमानस से उपर होता है जो लोकहित समाजहित, कल्याणकारी होता है ऐसे व्यक्ति को मरणोपरान्त **परिनिर्वाण** प्राप्त व्यक्ति कहा जाता है।
9. **निर्वाण** – जब कोई व्यक्ति उच्च स्तर का ज्ञान प्राप्त कर सभी दुःखों से रहित, शान्त चित्त मन का, ऐसी स्थिति को **निर्वाण** कहते हैं। निर्वाण को जीवित अवस्था में प्राप्त किया जा सकता है।
10. **प्रज्ञा** – प्रज्ञा का अर्थ निर्मल बुद्धि।
11. **सील** – नैतिक स्वभाव, अकुशल कर्म न करना।
12. **करुणा** – करुणा का अर्थ प्रेम, दयावान।



13. **स्तूप** – बौद्ध भिक्षुओं की अस्थियों को रखकर बनाया गया स्मारक। स्तूप भिन्न-भिन्न प्रकार, आकार जैसे गोल पत्थर, गोलाकार, चकोर, गुम्बदनुमा, आयताकार, वर्गाकार, छोटे-बड़े आदि होते हैं।
14. **चैत्य** – बोधिसत्व की अस्थियों को रखकर बनाया गया स्मारक।
15. **विहार** – बौद्ध भिक्षुओं के रहने का स्थान।
16. **तथागत** – जिसे तथ्य की, सत्य की बोधि प्राप्त हो गई हो। क्योंकि यह केवल बुध को प्राप्त हुई थी इसलिये इस शब्द का प्रयोग केवल बुध के लिये किया जाता है।
17. **बोधिसत्व** – जिसे बोधि (योग्य) ज्ञान प्राप्त हो। उच्च स्तर का ज्ञान प्राप्त करने वाला व्यक्ति, जिसमें बाबा साहब डॉ० बी०आर० अम्बेडकर हैं इसलिये उनके नाम के साथ **बोधिसत्व** का प्रयोग किया जाता है।
18. **सम्मा सम्बोधि** – सम्यक ज्ञान (जाग्रत मन का निर्माण)। जब चित्त एकाग्र, निर्मल, दोषरहित, दूषणरहित, ग्रहणशील, दक्ष, स्थिर भावनारहित हो गया हो।
19. **अर्हत** – निष्पाप, निष्कलंक। जो लालच, द्वेष, क्रोध, मोह-माया आदि से विरत हो।
20. **श्रामणे**र – 20 वर्ष पूर्व प्रवज्जया ग्रहण करने वाला।
21. **स्थविर (थेर)** – 10 वर्ष का जिस भिक्षु ने कार्यकाल पूरा कर लिया हो।
22. **महास्थविर** – 20 वर्ष का जिस भिक्षु ने कार्यकाल पूरा कर लिया हो।
23. **सम्यकजीवी** – बाबा साहब के अनुसार भिक्षु की भांति जीवन यापन, धम्म प्रचारक का कार्य करने वाला।
24. **परिव्राजक** – गृहत्याग करना।
25. **उपसंपदा** – भिक्षु संघ में प्रवेश मिलना।
26. **परित्राण** – संरक्षण।
27. **उपोसथ** – पवित्र दिन।
28. **संथागार** – लोगों के बैठने का स्थान।
29. **अनागरिक** – सादे कपड़े का भिक्षु।
30. **सम्यक** – उचित, उपयुक्त।
31. **पब्वज्जा (प्रव्रज्या)** – साधू रूप में घर, सम्पत्ति व परिवार आदि छोड़कर देश छोड़ना।
32. **समाधि** – मन को एकाग्र (एक) करना, उसकी जागरूकता को किसी खास चीज पर केंद्रित करना।
33. **बोधिवृक्ष** – पीपल का वह वृक्ष जिसके जिसके नीचे बैठ कर सिद्धार्थ गौतम ने ज्ञान प्राप्त किया था।
34. **नैतिकता** – धम्म में सबसे बड़ा स्थान नैतिकता को दिया गया है अर्थात् नैतिकता ही धम्म है और धम्म ही नैतिकता है।
35. **दान पारमिता** – सबसे श्रेष्ठ दान धम्म का दान होता है।
36. **त्रिशरण** – त्रिशरण अर्थात् त्रिरत्न (तीन रत्न) – बुध, धम्म, व संघ।
37. **सब्बे सत्ता** – संसार की समस्त मानव जाति के लिये मंगलकामनायें।
38. **त्रिपिटक (तिपिटक)** – बौद्ध धम्म की तीन पेटी (तीन पिटारे) पुस्तक,
 - 1- सुत्तपिटक – इसका संगायन स्थविर आनन्द ने किया था।
 - 2- विनयपिटक – इसका संगायन विनयधर उपालि ने किया था।
 - 3- अभिधम्मपिटक – इसका संगायन महास्थविर काश्यप ने किया था।



39. चार आर्य सत्य –

- 1– दुःख–संसार में दुःख है,
- 2– समुदय–दुःख के कारण हैं,
- 3– निरोध–दुःख के निवारण हैं,
- 4– मार्ग–दुःख के निवारण के लिये अष्टांगिक मार्ग है।

40. पंचशील –

1. हिंसा न करना,
2. चोरी न करना,
3. व्यभिचार न करना,
4. झूठ न बोलना,
5. नशा न करना।

41. अष्टांगिक मार्ग –

1. सम्यक दृष्टि : चार आर्य सत्य में विश्वास करना।
2. सम्यक संकल्प : मानसिक और नैतिक विकास की प्रतिज्ञा करना।
3. सम्यक वाक : हानिकारक बातें और झूठ न बोलना।
4. सम्यक कर्म : हानिकारक कर्म न करना।
5. सम्यक जीविका : कोई भी अस्पष्ट या हानिकारक व्यापार न करना।
6. सम्यक प्रयास : अपने आप सुधरने की कोशिश करना।
7. सम्यक स्मृति : स्पष्ट ज्ञान से देखने की मानसिक योग्यता पाने की कोशिश करना।
8. सम्यक समाधि : निर्वाण पाना और अहंकार का खोना।



42. पारमिताएं –

- यदि कोई व्यक्ति ईसाई न हो तो वह पोप नहीं बन सकता, मुसलमान न हो तो पैगंबर नहीं बन सकता, हर हिंदू शंकराचार्य नहीं बन सकता, लेकिन हर मनुष्य बुद्ध बन सकता है। बौद्ध धर्म में बुद्ध बनने के उपाय बताए गए हैं।
- जब कोई व्यक्ति 'दान' पारमिता को आरंभ करता हुआ 'उपेक्षा' की पूर्ति तक पहुंचता है, तब तक वह बोधिसत्व रहता है। लेकिन इन सबको पूरा करने के बाद वह बुद्ध बन जाता है। पारमिताएं नैतिक मूल्य होती हैं, जिनका अनुशीलन बुद्धत्व की ओर ले जाता है।
- बौद्ध धर्म की मान्यता है कि बुद्ध बनने की इच्छा रखने वाले को दस पारमिताएं पूरी करनी पड़ती हैं। ये पारमिताएं हैं। दान, शील, नैष्कर्म्य, प्रज्ञा, वीर्य, शांति, सत्य, अधिष्ठान, मैत्री और उपेक्षा।

1. **दान पारमिता** – दान का अर्थ उदारतापूर्ण देना होता है। त्याग को भी दान माना जाता है। बौद्ध धर्म में भोजन दान, वस्त्र दान व नेत्र दान की प्रथा है। दान बुद्धत्व की पहली सीढ़ी है। इसके पीछे कर्तव्य की भावना होनी चाहिए। प्रशंसा व यश के लिए दिया गया दान, दान नहीं होता।
2. **शील पारमिता** – सब प्रकार के शारीरिक, वाचिक, मानसिक और सब शुभ व नैतिक कर्म, शील के अंतर्गत आते हैं। मनुष्य को हत्या चोरी व व्यभिचार, झूठ व बकवास, शराब तथा मादक द्रव्यों से दूर रहना चाहिए। बुद्ध ने इनमें भिक्षुओं के लिए तीन शील और जोड़ दिए हैं कुसमय भोजन नहीं करना, गद्देदार आसन पर नहीं सोना और नाच-गाना तथा माला-सुगंध आदि के प्रयोग से बचना।
3. **नैष्कर्म्य पारमिता** – इसका अर्थ महान त्याग होता है। बोधिसत्व राज्य व अन्य भौतिक भोगों को तिनके के समान त्याग देते हैं। चूलपुत्र सोन के प्रसंग में आया है कि उसने महाराज्य के प्राप्त होने पर भी थूक के समान उसे छोड़ दिया।
4. **प्रज्ञा पारमिता** – प्रज्ञा का अर्थ होता है जानना, नीर-क्षीर विवेक की बुद्धि, सत्य का ज्ञान, जैसी वस्तु है, उसे उसी प्रकार की देखना प्रज्ञा होती है। आधुनिक भाषा में वैज्ञानिक दृष्टि व तर्क पर आधारित ज्ञान होता है। बौद्ध धर्म में प्रज्ञा, शील, समाधि ही बुद्धत्व की प्राप्ति के महत्वपूर्ण माध्यम होते हैं।
5. **वीर्य पारमिता** – इसका अर्थ है कि आलस्यहीन होकर भीतरी शक्तियों को पूरी तरह जाग्रत करके लोक-कल्याण, अध्यात्म-साधना व धर्म के मार्ग में अधिक से अधिक उद्यम करना। ऐसे उद्यम के बिना मनुष्य किसी भी दिशा में उन्नति एवं विकास नहीं कर सकता।
6. **क्षांति पारमिता** – क्षांति का अर्थ है सहनशीलता। बोधिसत्व सहनशीलता को धारण करते हुए, इसका मूक भाव से अभ्यास करता है। वह लाभ-अलाभ, यश-अपयश, निंदा-प्रशंसा, सुख-दुख सबको समान समझकर आगे बढ़ता है।

7. **सत्य पारमिता** – सत्य की स्वीकृति व प्रतिपादन ही सत्य पारमिता है। इसे सम्यक दृष्टि भी कहते हैं। जैसी वस्तु है, उसे वैसा ही देखना, वैसा कहना व वैसा ही प्रतिपादन करना सत्य है। यह बड़ा कठिन कार्य है। सत्य में सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प व सम्यक वाचा का समावेश होता है।
8. **अधिष्ठान पारमिता** – अधिष्ठान पारमिता का अर्थ दृढ़ संकल्प होता है। शुभ व नैतिक कर्मों के संपादन में अधिष्ठान परम आवश्यक होता है। पारमिताओं के अभ्यास के लिए दृढ़-संकल्प की आवश्यकता पड़ती है। दृढ़-संकल्प होने पर ही बोधिसत्व गृहत्याग करते हैं।
9. **मैत्री पारमिता** – इसका अर्थ है उदारता व करुणा। सभी प्राणियों, जीवों व पेड़ पौधों के प्रति मैत्री भाव रखना। बोधिसत्व मन में क्रोध, वैर व द्वेष नहीं रखते। जैसे मां अपने प्राणों की चिंता किए बिना बेटे की रक्षा करती है, उसी प्रकार बोधिसत्व को मैत्री की रक्षा करनी चाहिए।
10. **उपेक्षा पारमिता** – उपेक्षा पारमिता का अर्थ है पक्षपात-रहित भाव रखकर बुद्धत्व की ओर आगे बढ़ना।

कोई भी बोधिसत्व इन दस पारमिताओं में पूर्णता प्राप्त करके स्वयं बुद्ध बन सकता है।

संदर्भ सूची (Bibliography) -

- बुक्स
- इंटरनेट
- सोसल मीडिया

(कपिल बौद्ध)